नहीं किया जा सकता। प्रतीत होता है कि आधुनिक आग्नेय अस्त्रों के अतिरिक्त पूर्व काल में अनेक पार्थिव, जलीय, वायव्य तथा आकाशादि से निर्मित शस्त्र भी थे। आधुनिक परमाणु शस्त्र आग्नेय शस्त्रों की श्रेणी में आते हैं। परन्तु पूर्व में सभी पाँचभौतिक तत्त्वों से निर्मित शस्त्र प्रचलित थे। आग्नेय शस्त्रों का प्रतिकार वारुणी शस्त्रों से होता है, जो आधुनिक विज्ञान को अज्ञात हैं। आधुनिक विज्ञान को चक्रावात शस्त्रों का भी ज्ञान नहीं है। इन सब वैज्ञानिक उपकरणों के होते हुए भी आत्मा का न तो छेदन किया जा सकता है और न नाश ही।

अतएव मायावादी अपने इस मत को सिद्ध नहीं कर सकते कि जीव मूल रूप में परमात्मा से अभिन्न था, परन्तु अज्ञान के कारण उनसे पृथक् होकर माया द्वारा आवृत हो गया। जब अणु-आत्मा का भी छेदन नहीं किया जा सकता, जैसा श्रीभगवान् स्वयं कह रहे हैं, तो यह किस प्रकार सम्भव हो सकता है कि जीवों के रूप में परमात्मा का विच्छेद हुआ हो। सत्य यह है कि अणु-जीवात्मा और परमात्मा में सनातन भेद है। यही कारण है कि जीव माया-आवरण में पतनशील हैं और परिणामस्वरूप परमेश्वर श्रीकृष्ण का संग खो बैठते हैं। यह इस प्रकार समझा जा सकता है। अग्नि से स्फुलिंग गुणों में अग्नि के समान होते हैं, परन्तु अग्नि से अलग होते ही वे निस्तेज हो जाते हैं। 'वराह पुराण' में जीव को परमात्मा का भिन्न-अंश कहा गया है। भगवद्गीता के अनुसार भी जीव का सनातन स्वरूप यही है। अतएव सिद्ध होता है कि माया से मुक्त हो जाने पर भी जीवात्मा का पृथक् स्वरूप बना रहता है, जैसा अर्जुन के प्रति श्रीभगवान् की शिक्षा से स्पष्ट है। श्रीकृष्ण से प्राप्त ज्ञान के द्वारा अर्जुन निस्सन्देह मुक्त हो गया; फिर भी वह श्रीकृष्ण से एक कभी नहीं हुआ।

4.2

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः।।२४।।

अच्छेद्यः =काटा नहीं जा सकता है; **अयम्** =यह आत्मा; **अदाह्यः** =जल नहीं सकता; **अयम्** =यह आत्मा; **अक्लेद्यः** =जल से क्षय को प्राप्त नहीं होता; **अशोष्यः** =सुखाया नहीं जा सकता; **एव** =निस्सन्देह; **च** =तथा; **नित्यः** =नित्य; **सर्वगतः** =सर्वव्यापक; **स्थाणुः** =अविकारी; **अचलः** =स्थिर रहने वाला; **अयम्** =यह आत्मा; **सनातनः** =शाश्वत्।

अनुवाद

यह आत्मा अच्छेद्य है, अक्लेद्य, है, अदाह्य और अशोष्य है। यह नित्य, सर्वव्यापक, अविकारी, स्थिर रहने वाला तथा सनातन है।।२४।।

तात्पर्य

आत्मा के ये सब गुण निश्चित रूप से सिद्ध करते हैं कि वह परमात्मा का शाश्वत् अणु-अंश है। आत्मा अविकारी है, वह सदा इसी रूप में रहता है। अतएव इस सन्दर्भ में अद्वैतवाद को सिद्ध करना सम्भव नहीं है, क्योंकि अणु-आत्मा परमात्मा के समरूप कभी नहीं हो सकता। माया-बन्धन से मुक्त अणु-आत्मा इच्छानुसार